धीरे धीरे अँखियाँ माँ खोल रही है

धीरे धीरे अँखियाँ माँ खोल रही है,
लगता है मईया कुछ बोल रही है,

दुनिया के नज़ारे तो बेजान लगते ,
सूरज चन्दा कौड़ी के समान लगते,
आत्मा में अमृत घोल रही है ,
लगता है मईया कुछ बोल रही है,

आएगी जरूर मईया आज सामने,
अपने भगतों का देखो हाथ थामने ,
मिलने का मौक़ा ये टटोल रही है ,
लगता है मईया कुछ बोल रही है ,

लागे ना नजर मुझे हो रही फिकर ,
हीरे और मोती से उतार दूँ नजर ,
क्या करूँ मेरा तो ऐसा जोर नहीं है,
लगता है मईया कुछ बोल रही है ,

बनवारी ऐसी तकदीर चाहिए ,
आत्मा में माँ की तस्वीर चाहिए ,
ऐसा ये असर दिल पे छोड़ रही है ,
लगता है मईया कुछ बोल रही है ,

भजन गायक - माधुरी मधुकर
संपर्क - 8902154970

https://www.bhajanganga.com/bhajan/lyrics/id/6929/title/dheere-dheere-ankhiyan-maa-khol-rahi-hai-lagta-hai-maiyan-kuch-bol-rahi-hai-

अपने Android मोबाइल पर BhajanGanga App डाउनलोड करें और भजनों का आनंद ले |